करो। राजा आजकी रात्रि किसी प्रकार से बच-जांय! मैं अब जातीहूं तुम किवाड़ बंद करलो।

(दरवाजा बन्दकर बाहर टहलना)

मंथरा—(स्वागत) आज सोने को भी न मिला, आखें पिड़ा रहीहैं। क्या जानें आंखों से इतना कीचड़ कहां से आता है कि पोंछते २ अंगुलियां चटचटानेलगीं। मारे जलन के मरीजाती हूं। आह! कूबर भी पिड़ाने लगा और ऐंठता है। आहिरे! आज बाईने भी पकड़ लिया। घुटने रहे जाते हैं! मैंतो किसीकी बुराई में नहीं रहती हूं तो भगवान मल्हिका का देका असमतावत है! (बैठकर) भला यही नीकभा कि दिनका नपिड़ान, जोदिनका पिड़ातीतो न बाहर जाइ पउतिउंन इ सब बातैं सुन पउतिउं। मल्हिका जानिउ नपरत रमवा राजा हो जात। बडी रानी आजमारे खुशीके फूलरहीहै मैं साम् से चली आई मोका न देखेसि न मोसे बोली-येहिका देति है वहिका देतिहै अबकी बेराजाकी माता होगई। ऐसकबहूं

न होई। जब लग मंथरा जीतब तक भरत के सिवाय और कोऊ राजा न होई। जौनी बातका फलमैं जिसभांति घरवों रहै तौनीही तना भा। मोरि असि सलाह और कोहू से न बनिपडी, मैं ऐसे चाल्योंरहै ठीक वैसही भा। मोर कही बड़ २ मानतहैं जो केकई माना तोका बडीबातहै। मोरे आगे तो बड़ बिटवाहै। अब ऐसकरो जहिमा सब बनजाय। मोर राजाअमनाहींहै जोसत्यप्रतिज्ञा करिके फिर न करें। और रमवा औ असलरिका नाहीं है जो यह सुनिकै घरमें रहै। अब यह राजिखारै ऊवा जानो भरत तो मोरही बनावा राजा होई, यह मोरे बिना कुछ न करी। भरततो नामही का राजा होई, राज सबमैंहीं करिहौं पर इतने रही कि सिंहासन पर न बैठि हौं॥ पर पछितात हौं कि मोरे आपन कोऊ नाहींहै जो होत तो सुरंगवाका निकसवा कर वहिका मंचोकर देतिउं! जाइ देव अब पछितायका होई, अब चली अपना काम करी। (उठकर आकाश निरखिया) अब भोरहैगा सुकवा निकसि आवा

अब चलीभरतके बुलावेकाएक मनई पठई(प्रस्थान)

द्वितीय गर्भाङ्क

दशरथ शयान कैकेई एक ओर खड़ी।

(सुमंत्र का प्रवेश)

सुमंत्र—महाराज अभिवादन करता हूं (राजा का हाथ उठाकर प्रतिनमस्कार) महाराज ! नाना देशोंसे आये हुये राजा लोग और प्रधान २ प्रजा वर्ग और राज्यके समस्तकार्य कर्त्ता लोग और पुरोहित, ऋत्विक् और सभासद ब्राह्मण मंडली सभा में बैठे हुये हैं, और राज पुत्र के आसनोपयुक्त, मृगचर्मास्तृत और मणिमाणिक्य खचित अभिनव हेम सिंहासन सभा में रखदिया गया है; सम्पूर्ण चन्द्रमण्डल के सदृशशोभा विशिष्ट और मोतियों की माला से सुसज्जित सुवर्ण छत्र, मणिमयराज दण्ड और चामरादिक व्यंजन सब लाकर रक्खा गया है; और मनोहर कनक कलशों में नाना तीर्थों के जलमंगाकर भरदिये गये हैं; और श्वेत हस्ती औरश्वेत वर्णकी गायों को विचित्र परिच्छद से सुसज्जित करके संवद्ध किया गया है; कल्याण

दायिनी वर्णीया आठ सत्कुल की ब्राह्मण कंन्या विविध वस्त्रालकार से भूषित होकर अपेक्षा कर रही हैं; और अभिषेक की सबसामग्री उपस्थिहै; अब महाराज के शुभागमन होने से सब सुसम्पन्न हो जायगा ॥

राजा—(निस्तब्ध होकर) सुमंत्र, हम आज अस्वस्थ हैं, तुम एक बर रामचन्द्र को हमारे समीप लाओ? (नयन मूंदकर)

सुमंत्र—जो आज्ञा महाराज (स्वागत) राजा की दशा देखकर कुछ भला नहीं जान पड़ता है। (प्रस्थान)

कैकेई—महाराज, इतना कातरकाहेको होतहो? कहो तो मैंहीं रामको बुला लाऊं?

राजा—हा कठोर हृदया! हा चाण्डलिनी॥

(सुमंत्र के साथ रामचन्द्र का प्रवेश और पितृ मातृ चरणों में प्रणाम)

राजा—आंख खोलके रामको देखकर हा राम! तुमने काहे इस पामर को प्रणाम-(निस्तब्ध)

राम—(भय और बिषादके साथकैकेई को) माता, आज पिता ऐसे कातर काहेको होरहे हैं? पिताओर

दिन हमको देख अत्यंत आह्लादित होते थे, अति कोपके समय में भी हमको देख प्रसन्न होते थे, सो आज हमको देख क्या है ऐसा कह कर निस्तब्ध हो रहे? हमने क्या पितृ चरण में कोई अपराध किया है? अथवा पिता का कुछ पीड़ा हुई है॥

कैकेई—नहीं बेटा, न तुमने कुछ अपराध किया न राजा को कोई पीड़ा हुई है, राजाके हृदय में कोई बात है सो तुमसे कहने में लज्जित होते हैं, इस हेतु स क तरहें॥

राम-माता, पिता हमसे अपनी मनोगत आज्ञा करेंगे इसमें लज्जा क्या है? आपहीउस मनोगत वार्त्ता को कह कर मेरे मनका संदेह मिटा दो।

कैकेई-बेटा राम! राजा जो तुमको आज्ञा देंगे, उसकी भलाई बुराई विचार न करके आज्ञा पालन करोगे, ऐसा वचन देतो हम तुमसे कहें॥

राम—माता आजआप ऐसी बात क्यों कहती हैं? इससे जो हमारा मर्मभेदी दुःख हुआ है उसे अन्तर्यामी भगवानही जानते हैं। पिता की आज्ञा

प्रति पालन में जो हमारे मनमें द्विधाभव वा वितर्क हो तो इस तथा जीवन के धारण करने से क्या फल है? आप यह सन्देह दूर करके कहो मुझे पिताकी क्या अनुमति है, जिससे हमारे उत्कंठित चित्तको धैर्य्य प्राप्त हो।

कैकेई—राम, बेटे, तैसे उत्तम कुलमें जन्मलिया है तुम्हारे मुखसे तदनुकूल वाक्य सुनके हमने अति सुख पाया। अब तुमसे राजा के मर्म की बात कहदेने में कौन हानि है? पूर्व काल में राजा ने हमपर सन्तुष्ट होकर दो वर देने को चाहा था, हमको उस समय कुछ आवश्यक न थी इस लिये हमने राजा से कहदियाथा कि जब हमको प्रयोजन लगेगा उससमय हममांग लेंगी। राजा ने यह बात स्वीकार कीथी। कल रात्रिको राजा ने हमारी प्रार्थना से वही दोनोंवर मुझे देदिया; (अधोमुख) सो उनमें से एक में भरत को राजा करना और दूसरे में तुमको चौदह वर्षके लिये बनवास लेना। यह बात तुमसे राजा लज्जा के मारे नहीं कह सक्ते थे, सो हमको कहनापड़ा।

अब बेटा पिताके वचन का पालन करना तुम्हारे आधीन है। अब जो तुम सुपुत्र हो तो जटा बल्कल धारण कर बनमें जाके पिता को सत्य पाश से मुक्त करो॥

सुमंत्र—(स्वागत) हाय हाय! जो हम शोचते थे वही आगे आया! क्या सर्व नाशहुवा!

राम—हे माता! इससे अधिक भाग्य क्या है? जो पिताके सत्य बचन का पालन हमसे होय! यह कौन बडीबात है, पिता की आज्ञा होवे तो अभी आपके सामने अग्निमें प्रवेश करके अपने प्राण त्याग करसक्ता हूं! पिता माता परम गुरु हैं; उनकी आज्ञा बिचार करना उचित नहीं है। यह क्षणभंगुर शरीर धारण करके प्राणदाता, पालन कर्त्ता और रक्षयता पिता की अनुमति के पालन करने में जो क्षणमात्र अप्रवृत्ति उपजे, तो उसी समय यह जानपडता है कि हमारी आत्मा नर्कको जाने योग्य है॥

सुमंत्र—साधु रामचन्द्र। साधु रामचन्द्र।

कैकेइ—बेटा तुम चिरजीवी हो! तुम्हारी बातों से

हृदय शीतल होगया ! बेटा अब शीघ्रता करो; तुम जबतक अयोध्या को नहीं त्यागकरोगे तब तक महाराज स्नान भोजन नहीं करेंगे ॥

राम—हमको कुछ देरीनहीं है ! केवल मातासे और जनकनन्दिनी से बिदा होआवें (सुमंत्र को) सुमंत्र, पिताको ऐसी अस्वस्थ अवस्था में छोड़ जाना हमको उचितनहीं परन्तु क्या करें मझलीमाता शीघ्र बनगमन में आज्ञा करती है इससे तुम्ही पिता की सेवाकरो उनको छोड़के कहींन जाओ (प्रस्थान)

सुमंत—(रोतेहुये) माता यह तुमने क्या किया ? जिस रामके गुणग्राम में त्रिभुवन मोहित होता है उन्हीं राम को बनबास !

कैकेई—सुमंत, यह सब विधाता की इच्छा है, इससे मनमें कुछ और बिचार न करो । तुम राजाके समीप बैठो हम मंथारा से एक बात कहकर तुरंतही लौटी आती हैं । (प्रस्थान)

सुमंत—(स्वागत) अब क्या राजा को तुमने जीता रख छोड़ा है जो उनके पास बैठें ? हाय २ ! क्या

सर्व नाश हुआ ! अकस्मात् मेघविना बज्रपात हुआ ! रघुकुल मे ऐसी अकीर्त्ति, यह क्या सामान्य दुःख है ? राजा दशरथ का स्त्रीजित् नाम होना नहीं सहाजाता ! आज से संसार में स्त्री जित् मनुष्य को सर्व जन दशरथ नाम लेकर उपहास करगे, यह क्या सामान्य लज्जाकी बात है ? यह बात तो लोग न समझेगे कि राजा मायाविनी कैकेई के मायाजाल में फंसे हैं, और राजा के गलेमें सत्यरूप शिलाबांधकर अगाध दुःखसागर में डुबोदिया है (तरणा जानकर निरुपाया) यह तो कोई नहीं जानेगा ! और जाने भी तो क्या होगा ? दुरपनेय कलङ्क तो मिटने वाला नहीं ! चाहे राजा इस कलङ्क से मुक्त होजाय परन्तु राजमहिषी तो निस्तार नहीं पावेगी ! कुछही हो सबभांति रघुकुलको कलङ्क है ! जबतक सूर्य वंश का नामरहेगा तबतक यहकलङ्क कुल मम-त्व के साथ समता करेगा ! हमारे चित्तमें जो दुःख हुवा है इसको अन्तर्यामी परमेश्वरही जानते हैं ! परन्तु केवल कलङ्कीकी ही चिन्तानहीं

आगे और भी विपत्ति है! हम दिव्यचक्षु से अवलोकन करते हैं कि सर्व प्रियरामचन्द्रके बनगवन के पीछे राजाको कुछ अशुभ होगा अथवा राज के विषय में कुछ गड़बड़ होगी! हाय २! बहु बिवाह अशेष अनर्थ मूल हैं! कि सर्वसुख और धर्मको एक एकी नष्टकर देता है! आजहमको निश्चय हुआ कि पुरुष जितनाही सामर्थी हो, जितनाही सावधान रहे पर तोभी बहु बिवाह रूप हृक्षमें बिषमय फल उपजे होगा। (राजा की ओर देखकर) हमारे राजाने आज बड़ी बिषमय फलखाकर, अथवा अपने हाथसे मथकर क्षीर-सागरसे हलाहल निकालके पानकर देवाधि देव महादेव के समान जर्जित होकर ढुलपडे हैं; देवनीलकंठने तो मंत्रौषधी से अपनी रक्षाकरली थी परन्तु हमारे राजा के लिये कोई औषधी हमारी समझमें नहीं आती है! रामचन्द्रही राजाके प्राण हैं! रामबिना जीवन का कोई दूसरा उपाय नहीं है।

(राजा का चैतन्य होना)

राजा--सुमंत्र! तुम जो राम राम कहते थे सो वे कहां हैं?

सुमंत्र—महाराज, धीरज धरो. राम अभी आते हैं।

राजा—सुमंत्र! अभीतो राम यहीं थे, हमारी अनुमति बिना कहांगये?

सुमंत्र—महाराज! माता कौशल्या और जानकी से बिदाहोने गये हैं।

राजा—सुमंत्र! राम हमारे किस लिये बिदा हो गये हैं?

सुमंत—(अधोमुख होकर मौन होरहा)

राजा—क्यों सुमंत्र, तुम चुप क्यों हो रहे? हमारा प्राण व्याकुल है, हमको शीघ्र उत्तर दो?

सुमंत्र-महाराज! क्या कहूं? आप को तो यह विदित होहै कि राजकुमार बन गमन के लिये बिदा लेने गये हैं!

राजा—(रोदन के साथ) क्यों सुमंत्र, हमने तो राम से कुछ नहीं कहाहै, तो यह कठोरबात रामको किसने सुनाई?

सुमंत्र—महाराज की अचेत अवस्था में माता कैकेई ने उनको सब जनाय दिया ॥

राजा—हा सर्वनाशी । पिशाची ! रामका मुख देखकर भी उसके हृदय में लेश मात्र दया नहीं आई ! जिस रामको शत्रु भी मुंह फेर कर देखते हैं, और तारका राक्षसी भी मोहित होगई थी, और जिनके मधुरवचनसे पत्थर भी गल जाते हैं, कोई राम उसको माता कहकर पुकारा, तो भी इस कठोर हृदय काल सर्पिणी ने मेरे राम को डसा ? सुमंत्र ! अब हम इस चाण्डालिनी का मुख न देखेंगे और हम डाकिनी के घर में क्षणमात्र न ठहरेंगे, हम को उठने की सामर्थ्य नहीं है, तुम हमको पकड़कोले चलो ! हमारे राम जहांहैं हम कोभीवहीं ले चलो ॥

(सुमंत्र का आश्रय लेकर राजाका प्रस्थान)

चतुर्थाङ्क

प्रथम गर्भाङ्क

(कौशल्या का पुरी मध्यस्थ अंगन)

देवीका पुर घटस्थापन; पूजाके नाना उपचार उपस्थित; सन्मुख पूजक ब्राह्मण बैठे हैं; पीछे कौशल्या, सुमित्रा, जानकी, उर्मिला, वासती, चित्रा, और अन्य २ पुरनारीगण॥

पुरोहित—देवी कौशल्या, पूजा के संकल्प का उद्देश किस निमित्त होगा।

कौशल्या—आज हमारे राम प्रथमही प्रथम राजसिंहासन पर बैठेंगे इसलिये ऐसा उद्देश करो जिससे यह बात निर्विघ्नता पूर्वक सिद्ध होजाय॥

(पूजा का आरंभ मंगलाचार पूर्वक)

पुरोहित—(पूजा समाप्त होने पर) माई इस प्रसादी सिंदूरको ग्रहण करो, हम जाते हैं (सबों का पुरोहित को प्रणाम करना और उसका प्रस्थान)

कौशल्या—(सीता के ललाट में सिंदूर लगाते हुये) बेटी जानकी तुम हमारी गृह लक्ष्मी हो, तुम

सौभाग्य वती होकर राज रानी हो, और राज-पुत्र को प्रसव करो (और सबोंको सिंदूर लगाना)

(कोशल्या और सुमित्रा का प्रणाम करके सीता, उर्मिला, वासती का प्रस्थान)

कोशल्या-चित्रारो, तुम बेटी एक काम करो, पूजा की सामग्री को उठाकर घरमें धरो॥

(राम का प्रवेश)

राम-(स्वागत) हमराजा होंगे इस हेतु हमारीमाता अनेक शुभ कर्म और अनेक मंगलाचार करती है, परंतु उधर को जो अमंगल होरहा है उसे नहीं जानती है। प्राणप्रिय भरत को राजदेकर बनमें जानेमें हमको कुछ दुःख नहीं है; परन्तु माताजो निराश हावेगी यही हमारेमनमें संताप है। प्रथम तो पास रहकर माता पिता की सेवा न करसके, दूसरे हमारे विच्छेद से वे अत्यन्त व्याकुल होगे, यही चिन्ताहै। नहीं तो राज्य छोडना कौन बडी बात है ? चौदह वर्ष क्या ? चाहे जन्मभर क्लेश उठाकरपिता के सत्य धर्म का पालन हो तो यह क्यासामान्य बाबा की बात है॥

(निकट आकर माता को प्रणाम)

कौशल्या—आओ बेटा, देवीजी तुम्हारा कल्याण करें! कल शेषरात्रि को दुःस्वप्न देखकर प्राण व्याकुल हुये थे, इसलिये तुम्हारे कल्याण के निमित्त घट स्थापन कर स्वस्त्यय पूर्वक देवीजी का पूजन कराया! जैसे महाराज आज तुमको बड़ा करके राजभार देते हैं, भगवती करे तुम ऐसे ही राज्य को संभालकर उनका मुख उज्ज्वला करो।

राम—(अधोमुख होकर) माता अब वह चिन्ता वृथा है।

कौशल्या—क्यों बेटा?

राम—मझली मा केकेईने पिता को सत्य पाश में बद्ध करके उनसे भरत के लिये राज्य और हमारे लिये १४ वर्ष बनबास, ये दोनों बरमांग लिये हैं; सो—

कौशल्या—राम रे! तुमने माता के हृदय में निर्घात शेलमारा (पतित व मूर्छित)।

(राम का माता को गोदी में तुरन्त उठा लेना और सुमित्रा का मुखपर जल सेचन करना।)

चि-(ऊंचे स्वरसे रोकर) हाय हाय! ये क्या हुआ! हमारा कपाल फूटगया! अब हम किसकी परिचर्या करेंगे?

(लक्ष्मण का प्रवेश)

लक्ष्मण—भाई यह क्या? बडी माता को क्या हुआ है?

राम-भाई, और कुछ बात नहीं; पिताने आज मझली माता को पूर्व प्रतिश्रुत दोवर दिये हैं वे दोनों यह हैं कि हमको १४ वर्ष बनवास और भरतको राज्य। माता हमारी यह सुनतेही मूर्च्छित हो गई है सो भाई कोई वस्तु देदो जिससे दांती खुलजाय।

(वस्तु का देना और सचेत होना)

कौशल्या--(किंचित् उठकर) हाय। मैं क्या कहीं स्वप्न देख रहीहूं? सत्यही क्या सरयके तटपर अयोध्या वासी हाराम २ करके रोते हैं? और सच मुच सिंह पौर गिर कर कौशल्या को स गंरो कलिया? कहो सुमित्र सत्यही प्राण प्रियराम चन्द्र हमको छोड़गये?

राम—माता! हमतो तुमको पकड़े हुये हैं।

कौशल्या—कहांहो बेटे? देखें, तुम्हारा चन्द्र मुख मको

भांत देखें! एकबार मुझे माता करके बोलो, नहीं तो हमें बिश्वास नहीं होता। हा राम! आज तुमने मुझ ऐसी बात क्यों सुनाई? (उठ कर मुख के चूंबन) तुम तो हमारे यत्न का धन हो, अन्ध के नच हो! हमने कितने क ब्रतादि और शिव पूजन और कठिन यज्ञादि करके तुमको पाया है॥

राम—माता धीरज धरो इतनी कातर न हो॥

कौशल्या--बेटा, हम कैसे धीरज धरें? हम राजरानी होकर बहुत दिनसे सौत की यत्नणा में जलरही हैं; केवल तुम्हारे मुखचन्द्र के देखने मे सब जलन मिट रही है। अपने मनहीं मन विचार करती थी कि पीछे राम से हमको सुख प्राप्त होगा, दु:खनीकी आशालता नहीं फलतही ईर्षा रूप कीटने नष्ट करदिया! हमनेकिसी केलिये बुराई नहीं करी, तब काहे को हमारी भलाई उससे नहीं होगई? हा कठिन बिधाता! तुम्हारे हृदय में क्या यही था? हमको सारधन देके बंचित किया! पर विधाता का क्या दोष है, सब

हमारे कर्मों का फल है! पूर्वजन्ममें कितना पाप किया है और कितनेही मनुष्यों को भोजन के समय उनकी थाली खींच ली है, और कितनी गौवोंके बछडे हरलिये, इन्हीं पापोसे बिधाताने हमारे कर्ममें ऐसाही लिखदियाथा! हा राम! तुम इस अभागिनी के उदरमें जन्म लिया इस कारण तुमको भी दुःख उठाना पडा! तुमक्यों इस पापिनी के गर्भमें आये? तुमजो कैकई के संतान होते तो क्या महाराज ऐसा राजत्व में बंचित करते?

लक्ष्मण—भाई! बड़ीमाता का यह दुःख हमसे देखा नहीं जाता! सर्वगुणाकर ज्येष्ठ भाईके बैठेहुये कनिष्ठ को राजा होना किसी समय किसी देश में नहीं सुनने में आया। ऐसा अबिचार कभी किसी से नहीं सहा जाता! पिता ने वृद्ध दशा में बिमाता के बशीभूत होकर भली बुरी बार्त्ता के विवेक से रहित होरहे हैं, उनसे और कुछ राज धर्म्म होने की संभावना नहीं है; इससे क्या आप अपने हाथसे अपनी राजलक्ष्मी दूरकरेंगे?

जब अधिवास होचुका तब यह राज्यभी आपका होचुका, सो आपके राजमें से आपको निकाल देनेकी किसकी सामर्थ्य है ? राम के होते हुये अयोध्याके यौवराज में दूसरे मनुष्य का अभिषेक होना लक्ष्मण के जीते जी नहीं हो सक्ता है ! यह हमारे शाल दृक्षके सदृश दृढ़ और विशाल बाहु क्या केवल मुखमें ग्रास डालने के लियेहैं ? यह जो शत्रु को संहार करने वाला धनुर्बाण और मर्म के भेदन करने वाली यह जो तरवार है, यह क्या देखने के लिये है ? हम दर्पसेकहते हैं कि सत सहाय यह सब अस्त्रादिक हमारे समीप रहने से इन्द्रादि दशदिक्पालसे भी शत्रुता करने से भय नहीं रखते हैं ! अब हमको आज्ञा दे।, राज्य में यह हिंसाकूल बर प्राप्त की वार्त्ता प्रचारित नहीं होतेही राज्यको अपने स्वाधीन करलें । हमको क्यों बल करना पड़ेगा ? समस्त प्रजावर्गों में धनीवा निर्धनी लोग ऐसे कोईनहीं हैं, जो आपके गुणों से वशीभूतनहीं हैं; परजो कोई दुरबुद्धि इसबात में सिर उठावे तब देखि-

येगा कि धर्म्म के प्रसाद वा आप के आशीर्वाद से थोड़े दिनमें समस्त पृथ्वी मगडल को आपके आज्ञाधीन कर देंगे ॥

कौशल्या—(हर्षसहित) बेटा लक्ष्मण! तुमको और क्या अशीस दें, हमारे सिरमें जितने बाल हैं उतनी तुम्हारी परमायु हो! धन्य तुम्हारी माता को जिसके गर्भमें तुमने जन्मलियाहै! बेटे, तुम्हारी बात सुनने मेहमारी छाती ठंढी हुई, तुमने हमारी जलती अग्नि को निर्व्वाण किया, भूले हुये पथिक को मार्ग दिखा दिया! अबकोई ऐसी बात करो जिससे राम बनमें न जांय। लक्ष्मण, राम निधि को छोड़कर क्या लेके घरमें रहेंगे? और किसका मुख देखकर जीवेंगे? खाली ऐश्वर्य्य लेकर क्या करेंगे?

राम—(लक्ष्मण) भाई लक्ष्मण तुम हमारी दक्षिणभुजा हो! तुम जो हमको अपने प्राण से अधिक समझते हो और गुरुदेव के समान मानते हो, सो हमको भली भांत विदित है; तुम्हारा जो बल विक्रम और साहस अतुल्य है, यह भी हम-

को विदित है; और माता जो अपार दुःख सागर में मग्न है, यहभी दीख पडता है; परन्तु क्याकरें, इसका कोई उपाय नहीं है! पिताके सत्य वचन प्रतिपालके लिये बिमाता के सन्मुख बन गमन को स्वीकार किया है, अब कहो यह क्षण भंगुर अकिंचित कर राजकी लालसा से प्रतिज्ञा भंगकर अपयश, और अधर्म का भाजन होना, और पिता को सत्यच्युत, सुतरां स्वर्ग च्युत करना क्या उचित है? भाई तुमने जो धर्म पथ छोडकर जो २ बातें अभी कहीं, और अकारण कोप करके स्वल्प बुद्धिकी नाईं परम पूज्य पिता को जो न कहने योग्य थीं बुरी बातें कहीं, यह बात फिर कभी मुख पर न लाना; ऐसी बातको मुख पर लाने से भी बडा पाप होता है! जिस पिता से जन्म, वृद्धि, सुख, स्त्रस्ति, मान, यश, विद्या, धर्म, सब मिलता है, सामान्य बन गमन से उस पिता का ऋण परिशोध नहीं होता! भाई, विचारो, उसी पिता का सत्य पालन करना क्या परम सौभाग्य की बात नहीं है?

आज वही भाग्य हमारा उदय हुआ है; इसका शोच करना क्या है? क्या महाराज अपनी इच्छा से बनमें भेजते हैं? वह क्या करें? जैसे सिंह व्याध के जालमें फंसकर सामर्थ्य रहते भी निःसत्व होजाता है, और इच्छा रहते भी निश्चेष्ट होजाता है, पिता ऐसेही निरुपायहो रहेहैं। हम तुमको निश्चय कहते हैं, पिता का कुछ दोषनहीं, परंतु इसी चिन्तामें हमारा मन व्याकुल हो रहा है कि इस दुःख और पुत्रशोक और कलंक भयसे हमारे यशस्वी पिता की दैहिक अमंगल न हो जाय! इस लिये भाई लक्ष्मण, तुम क्षत्रिय सुलभ अनर्थकारी उग्र भाव छोड कर शोकशरसे विधेहुये भग्न चित्त पिताकी सुश्रुषा में रहो, हम तुम्हारे भरोसमें वृद्ध पिता और शोकातुरा माताको छोड़ कर निश्चिंत होकर बनको जाते हैं!

कौशल्या-(रोकर) बेटा मेरे! बन जाने की बात न कहो! मैं तुमको छोड कभी नहीं रह सकूंगी! मैं जिस दिन तुम्हारा मुख नही देखती हूं उस

दिन मुझको दिन रात नहीं जान पड़ता है! तुम कब आकर मा कहके पुकारोगे इस लिये दिन भर कान धरे बैठी रहती हूं। कोई तुम्हारी बड़ाई करे तो हमको माना हाथ में चाद मिल जाता है! तुम जितने दिन बिश्वामित्र के साथ रहे थे, सो उतने दिन किसीका भली भांत मुख उठाकर नहीं देखा! जिसको पलभर न देखे प्रलय समान जान पड़ताहै, हम चौदह वर्षतक पत्थरकी छातीकरके क्योंकर जीतीरहेंगी? तुम ऐसे गुणवान पुत्रको जोपेटमें रक्खाथा तो क्या दुःख पावेंगी? क्याविमाताका मनोरथपूर्णकरके अपनी माताको अपार समुद्रमें डुबाओगे? और राजा की आज्ञा अपनी माताके अपघात मृत्यु से क्या अधिक है? वेही क्या तुम्हारे गुरु हैं, हम क्या कोईनहीं हैं? हमने जो दसमहीने तक तुमको पेटमें धारणकरके कष्टपायाहै, और तुमकोमहा कष्टोंसे पाला है, और तुमको छाती पर धरके तुम्हारी तोतली बोली सुनकर यह सब कष्ट भूल जातीथी, तुम जब हंसते थे तब हमको प्रसन्नता

होती, और जबरोते तब अधीर्यहोताथा, तुमको जब कोई पीड़ाहोती तो देवी देवताको मनाती थी, महाराज ने तो तुम्हारे लिये इतना दुःख नहीं उठाया ! तब विचार करके देखो, कि महाराज बड़ेहैं कि हम बड़ी हैं ? महाराज तुमको बनबास देते हैं, हम गृहबास, तुम ज्ञानवान होकर कैसे माताकी आज्ञा भंगकरोगे ?

राम—माता ! तुमको अब शोक उपस्थित होरहा है इसलिये ऐसी अनुमति करतीहो; नहीं तो जिस माताने हमको शिशुकालसे उपदेश दियाहै, कि पिताकी आज्ञाको भलाई बुराई का विचार न करके पालन करना चाहिये, सो माता आज क्यों बिपरीत अनुमति देती है ? अब तुम अनर्थ शोकको दूरकरोतबतुम्हारा चित्तसुस्थिर होगा। तब इस अनुमति की प्रवृत्ति नहीं रहेगी। माता तुमको तो विदित है कि माता पिताकी आज्ञा उल्लंघनकरकेपतितहोना और कुलगौरवको कलंक लगाना रघुवंशी का काम नहीं है ! फिर पिता अभेद्य सत्यपाशमें बंधेहैं, सो पिता अनुमति दें

मान हैं, इसबातको सुनतेही हमको बनवास व्रत ग्रहणकरना और पिताको सत्यपाशसे मोचन करना उचितहै। माता! शास्त्र और धर्मनीति आपसे कुछ छिपी नहीं है, तब तुमको और २ साधारण स्त्रियोंकी नाईं मोह क्यों होताहै? सामान्य वात्सल्य स्नेहके वशहोकर धर्म्मकी सुन्दर मूर्त्तिनहीं देखती हो? थोड़ेकालके पुत्र विच्छेद को भयानक आकार कल्पनाकर आपका हृदय क्यों व्याकुल होता है? आप धीरज न धरेंगी तो दोनों नष्ट होते हैं।

कौ०—राम, बेटे! ऐसी बात न कहो, इससे हमारा हृदय बिदीर्ण होताहै। तुमने हितकी बातें जो कही वह मुझको सबविदितहैं; परन्तु हृदयनहीं मानताहै। जो तुमको बनमें जानाही होय तो चलो हमभी तुम्हारे साथचलें। हमको राज भवनमें रहकर क्या करना है? राम तुम अनाथों की नाईं बन बनमें घूमोगे, और वृक्षोंके नीचे पत्ते बिछाकर सोओगे, और कड़ुआ कसैला फल मूलखाकर दिन काटोगे, और हम मणि मन्दिर

में सुवर्णके पलंगपर सुखसे सोवेंगी ! दूध मिठाई से इस जलेपेटको पोषणकरेंगी, ऐसा होसक्ताहै? ऐसा क्या माताके हृदय से सहाजाता है ? हमको बड़ी आशाथी कि राजमाता और राज-रानीकी सास होकर ... जन्ममें सब सुख भोग करेंगी ! परन्तु लोगोंकी उपाधिसे उस आशामें जो विषाद होगया, तो चलो हम घरको जलाकर, गृह लक्ष्मी जानकी को साथलेकर इस राज्यको छोड़दें । चलो उसीदेशमें चलें जहां सौभाग्य-वती अबलाजाति को सौतका डाह नहीं सहना पडताहै ! हमतुम्हारे लिये राजकी इच्छानहीं क-रतीहैं, भरत निःकंटक राज्यकरें, हमको कुछ दुःख नहीं है; केवल दिनभरमें एकबर तुम्हारे चन्द्र-मुखसे माता बाक्य सुनतेही हमको त्रिभुवन के राज्य मिलने का सुख प्राप्त होगा । तुम हमको पर्णकुटी में छोड़कर भीख मांग लाओगे उसको तुम्हारा और जानकी का मुखदेख अमृत समान भोजन करेंगी ॥

राम—माता ! आपतो सबकुछसमझती हैं; पर अन-

होनी बात कहकर काहे को शोक बढ़ाती हो! आपके साथ बनमें जानातो हमारा स्वर्गबासहै; परन्तु पिताकी आज्ञा बिन हम क्योंकर बनमें लेचलें, और आपभी अनुमतबिना कैसे चलेंगी? महाराज तो हमारे तुम्हारे दोनों के प्रभु हैं। स्त्रीजनों के लिये पतिही महागुरु होते हैं, इस हेतु तुमको पतिकी आज्ञा बिना किसी कामके करने का अधिकार नहींहै, सो आपको तो बिदितही है, आपसेही हमने सुना है कि सांसारिक धर्म्म कर्म्मोंमें अबलाजनोंको पतिकी सेवाही मुख्यधर्म्म है। इसलिये अब शोकाविभूत हमारे वृद्ध पिता की सेवा त्यागकरके आपका बनजानालोक बिरुद्ध वो धर्म्म विरुद्ध होता है वा नहीं, यह आपही विचार करें॥

कौशल्या—बेटा राम! सत्यकहो तुम कौन महापुरुष हो और किसके शापसे पृथ्वीपर जन्मलेकर हमारे पुत्र कहाये? तुम यह ज्ञानकथा जब कहतेहो तबइस मन्दभागिनी को अपनीसन्तान का ज्ञानविस्मृत होजाताहै; तब तुम्हारे मुखार-

बिन्दु पर ऐसी शोभा दीख पड़तीहै कि मानों देवलोक से कोई महापुरुष हमको छलने को आयाहै। भैय्या हम महापापिनीने जो तुमको गर्भ में धारण किया यही धन्य मानती हैं, और इस वय में तुमको धर्म्म ज्ञानोदय देखकर और तुम्हारा हितवाक्य सुनकर हमारी बुद्धि जाती रही। माता होकर ऐसे पुत्रको कोई बनमें भेज सक्ता है? बेटा कहो तुम्हारी माता को और कोई दूसरा माता कहने वाला है ?

राम—माता! क्या करोगी? देव इच्छा को कोई नहीं रोक सकताहै। धर्म्म के लिये सब सहना पड़ता है, माया मोह सब भूल जाता है। तुम यही असीस दो कि हम धर्म्म बलकी सहायता से चौदह वर्ष चौदह घडीके समान निर्विघ्न काट कर आपके चरणों का दर्शन करें॥

कौशल्या—(ऊर्द्ध दृष्टि से हाथ जोड़ कर) हा भगवती! तुम्हारे मनमें क्या यही बात थी? हे देवि! हमारे राम राजा होंगे इस लिये तुम्हारी पूजा

को, अभीतक घट स्थापित है, क्या उसका फल
यही है ? कहां राज्य, कहां बन बास ॥

(सुमित्रा और चित्रा का रोदन)

राम—माता धीरज धरो, क्या करें ? पिताने सत्य
किया है, जानाही पड़ेगा।

(कौशल्याका रामको गोदीमें लेना और मुखचूमना)

माता ! हम यह भीख मांगते हैं; तुमको हमारी
शपथ है हमारे बनजाने के पीछे पिता से कोई
कठोर बचन न कहना, और उनके सामने रोना
नहीं, और हिरासा न होना; इससे पिता उसी
समय आत्मघात करेंगे ! मझली मा कैकेई
के साथ किसी प्रकार बिवाद न करना।
यह निश्चय जानो कि हमारे बन बास होने में
उनका कुछ दोषनहीं है, केवल दैव इच्छासे है।
देखो तो जो माता भरतसे अधिक मुझपर स्नेह
भाव रखती थी और जो स्वप्न में भी हमारी
बुराई नहीं चाहती थी और जो हमारा यश
सौभाग्य सुनकर प्रसन्न होती थी, सो होतव्यता

के प्रतापसे वही कैकेई के हृदयमें ईश्वरेच्छा से अकस्मात् काहेको असत् कर्म की प्रवृत्ति होगई ? इस हेतु प्रार्थना है कि हमारे कहने से इन पर और भरत पर पहिली भांत स्नेह दृष्टि रक्खो ॥

(राम लक्ष्मण के भिन्न सब का रोदन)

लक्ष्मण—आर्य ! माता को तो समझाया पर हमतो स्त्री जाति नहीं हैं, हमको तो घरमें रहने का कोई कारण नहीं है, हमतो आपको छोड कर इन्द्रालय में भी रह नहीं सकते ! इस लिये आज्ञा करिये कि चिर सहचर साथ चले, सदैविक अनुचर फल मूलादि आहरण करे, सदैविक सेवक बनमें आपके चरण कमलों की सेवा करके अपना जन्म सफल करे ॥

राम—प्यारे भाई लक्ष्मण ! आओ मिललें (आलिंगन करना) भाई तुम्हारे गुणोंको हम जन्म भरनहीं भूलेंगे ! परन्तु भाई बनमें महादुःखहै । छोटी माके अंचल धन को क्योंकर बनचर का साथी बनावेंगे ? विशेषकरके यदि हम तुम दोनों दूर चले जायगे तो हमारे शोकान्ध वृद्ध पिता माता

की क्या दशा होगी और उनकी संभाल कौन करेगा और उनके धैर्य किसभात होगा ? भरत भी अयोध्यामें नहींहैं, यदि शत्रु चढ़आवे तो राजकी रक्षा और प्रजामें शान्तिरक्षा कौन करेगा? इस लिये भाई हमारे संगदुष्कर पर्य्यटन व्रत ग्रहण न करो और गृह बासी होकर इस महद्धर्म्म का पालन करो ॥

लक्ष्म०—आप हमारे हृदयकी बात जानकर भी हमें ऐसा उपदेश करतेहैं, वो केवल हमारा दुर्भाग्य है। आपके चरण कमलके देखे बिना हमारे जीवनको और क्या आकांक्षा है ? जिस २ कामके लिये हमको अयोध्यामें रहनेकी अनुमति होती है सो हमसे एकभी नहीं निभैगा; परन्तु दूसरेसे सहजहीमें बन पड़ेगा। मझले भाई को लानेके लिये शीघ्रगामी अश्वारोही गया आजही नंदिग्राम में जावेंगे, चाहे गये भी हों, वह आनही चाहते हैं; यदि भाई के आने में विलंब भी होगा तो सुमंत्र आदि अष्टजन मंत्री लोग और सेनापति वीरेन्द्र सिंह जब विद्यमान हैं,

तब राज काजमें कुछ चिंता नहीं है। और राज में विपत्ति होय तो हमको क्या? जो राज के किंकर हैं वेही राजकी रक्षा करेंगे। हम जिसके दास हैं उसीके अनुसरण भिन्न दूसरे काम में प्रवृत्त नहीं होंगे॥

सुमित्रा—(लक्ष्मणके शिरको चूमना) बेटा लक्ष्मण! आज हमारा जीवन सफल हुआ। तुम्हारे चन्द्र मुख से आज अमृत वृष्टि हुई! तुम्हारे चन्द्र मुख देखे बिना चाहे प्राणजाते रहें सो भी सही परंतु तुम अवश्य रामके साथ बनमें रहो, राम के साथ बनमें रहने से जो सुख हमको होगा, दिग्विजय करके कुबेर की संपत्ति भी हमें ला-दोगे तो भी वैसा सुख न मिलेगा। हम आज्ञा देती हैं कि तुम निःसन्देह रामके साथ होलो।

राम—भाई, यदि जननी की भी यही इच्छा है तो तुम हमारे साथ चलो। तुम हमारे सुखमें सुखी और दुःखमें दुःखी रहे हो, हमारे बिना एक क्षण मात्रभी रह नहीं सकते! (सुमन्त्र का प्रवेश) सुमंत्र क्या तुम पिता को छोड़कर आये?

सुमंत्र—महाराज तुम्हारे दर्शन के लिये अत्यन्त व्याकुल हो रहे हैं इस लिये हम आये हैं।

राम—सुमंत्र! हम जब आये तब पिता ने क्या कहा? अब पिता कहां हैं और क्या कर रहे हैं?

सुमंत्र—राजपुत्र, तुम्हारे आने के पीछे ही महाराज को चेत हुआ तब उन्होंने आप की बात पूछी। आपसे मध्य महिषी ने जो २ बातें कही सो सब हमसे सुनकर एका एकी विषाद सागर में डूब गये। और घृणा करके कुपित हो उनकेघर से चले आये। यहीं आते थे, द्वार तक आये परलज्जा और शोक से भीतर न आ सके। राहसे लौट कर छोटी माके घरमें सो रहे हैं और हाय हाय कर विलाप कर रहे हैं। कभी तो कहते हैं कि हमारा सर्व धन संपत्ति, समस्त राज परिच्छद, समस्त सेना सामन्त श्री रामके साथ कर दो, जिससे हमारे रामबनमें भी राज्य कर सकें। कभी कहते हैं कि अबहम लोक में मुख नहीं दिखावेंगे, आत्म हत्या करेंगे! फिर कहते हैं हम रामके साथ बनमें जावेंगे!

राम—छोटी मा! आप हमारी माके साथ घरमें जाकर पिता को धीरज धराइये, तम आप कातर होकर उनको अधिकतर व्याकुल न कीजियो, हम लक्ष्मण के सग एक बेर जानकी के यहां जाकर उनसे मिलकर शीघ्र आपके चरणों क समीप आते हैं।

(सबों का प्रस्थान)

चतुर्थाङ्क

द्वितीय गर्भाङ्क

(सीता का गृह)

(सीता, उर्मिला और वासंती उपस्थित)

सीता—सखी वासंती! आर्य पुत्रके विलंबसे मैं व्याकुल होरही हूं। सुमंतके साथ जब पिताके समीप गये हैं तब कह गयेथे कि तुरंत लौट आते हैं; इसलिये हम देवी की पूजा होतेही तुमको साथ लेकर शीघ्र घर चली आईं, परन्तु वे अवतक क्यों नहीं आये?

वासंती—बहन ! तुम सब बातों में शीघ्रताकरती हो, किंचित्कालभी अलग होने से तुमको अधैर्य हो जाता है ! इसी को पलमें प्रलय कहते हैं ! तुम क्या आंचल में बांधरखना चाहती हो ? आज अनेक देशों से बड़े २ राजा और कितनेक मुनि ऋषि आये हैं उनसे बातचीत करते होंगे; सो यह सब छोड़कर क्या तुम्हारे ही पास बैठे रहेंगे ?

उर्मिला—अथवा उनको महाराज राजनीति सिखाते होंगे ॥

वासंती—(हंसकर) तब कौशल्या कोभीउचित है कितुम को भी राज नीति सिखावें ॥

सीता—सखी तुमतो हंसी करतीहो परन्तु हमारे प्राण कैसे व्याकुल होरहेहैं सो क्या कहूं ? विचारती हूं कि शुभ दिनमें अशुभ वार्त्ता को मनमें न लाऊं, परतब भी मंद चिन्ता आपसे आप उत्पन्न होतीहै। हमारी दहिनी आंख फड़कती है, और कभी २ दहिना अंग भी कंपित होता है। इतने अमंगल के चिन्ह देखकर क्या चित्त स्थिर

रह सकता है ? परन्तु क्या करूं ? प्राण वल्लभके आनेतक धीरज धरे रहूं कि आदमी भेजकर समाचार मंगाऊं ?

वासंती—जानकी वो देखो तुम्हारे अन्तर्यामी तुम्हारे हृदयकी व्यथानिवारणकरनेको आते हैं। अबतुम्हे पद्मपत्र के जलकीनाईं चंचल होना नहीं पड़ेगा। मैं उनसे कारण पूछती हूं (राम लक्ष्मण का प्रवेश) राज पुत्र आपके आने में जो विलंब हुआ इससे हमारी प्रिय सखीको बडी चिन्ता रही।

राम—(सीताकी ओर हंसकर) क्यों प्यारी। अकस्मात् ऐसी चिन्ताहोनेका क्या कारण है ?

सीता—(लज्जासहित) आर्यपुत्र, कल आपने कहाथाकि सबेरे राज्याभिषेक होगा; परन्तु इतना विलंब हुआ, अभीतक उसका डौल डालनहीं जानपड़ताहै! राजछत्र, राजदण्ड, राजभूषण, राज किंकर, कोई भी तो साथ नहीं हैं ? राजपुर में नृत्य गीतादिक की ध्वनि और उत्सवका कोलाहल कुछ सुनाई नहीं देता! प्राण वल्लभ! सत्य कहो, आज आपका स्वाभाविक प्रसन्नभाव और

सुमधुर सहज हास्य क्यों नहीं दीख पड़ता है? क्यों आज कपट हास्य में दुःख की वार्त्ता को छिपाते हो?

राम—प्रिये! जो वार्त्ता सबको विदित है! सो तुमसे क्यों छिपावेंगे? तुमसे कहनेही तो आये हैं! प्रियतमे! क्यों मिथ्या राज्याभिषेक की आशा करती हो? विमाता कैकेई की कृपा से हम निश्चिंत होगये! पिता को सत्य पाशमें बांधकर जो दो बर मांगलिये हैं, उनमें से एकमें हमारे बदले प्रिय भ्राता भरत को राज्य भार, और दूसरे में हमारे लिये चौदह वर्ष वनवास निश्चय होगया है। तब हे प्रिय! अब हम अयोध्या के राजा न होकर, विपिन राज्य के राजा होने जाते हैं! अब हमको राज छत्र और राजदण्ड और राज भूषण की क्या आवश्यकता? छत्र चामर धारी किंकरों का क्या प्रयोजन है!

बिहरत जोने बन मृगराज।
वह मम सुन्दर होइहि राज॥
गिरि गुहलता कुटी अरु कुंज।

होइहि मम मन्दिर शुभ पुंज ।
बनचर निशिचर बिघचर आदि ।
मम अनुचर होइहे अविषादि ॥
अरु तरुलता बनस्पति चीति ।
प्रजा बर्ग होइहैं सह प्रीति ॥
फल अरु पुष्प बीनिबे जोन ।
राजाकर होइहि वह तौन ॥
पवन चंवर करिहै निरमंड ।
मेघहि मानो छत्र अखंड ॥
स्वच्छरु निर्मल जो आकाश ।
चन्द्रातप होइहै अविनाश ॥
प्रति २ कुंज शिला तरु जोन ।
उनके तर बेदी हैं तौन ॥
बेदी चित्रित मणि सविचित्र ।
ह्वै हैं सिंहासन सु पवित्र ॥
भृंग बिहंगमादि के बोल ।
खंजन मयूरादिक सु कलोल ॥
येही मानों गण गन्धर्व ।
गान करत मम भावन सर्व ॥

बानर करिहिं विदूषक काज ।
प्रति ध्वनि करिहिं वार्त्ता साज ॥
सर निर्झर की तरंग महान ।
ये जीवन दायक मन जान ॥
पुष्पक पर्ण लता कुश दच्छ ।
होइहि मम शय्या अति स्वच्छ ॥
बनतरु पुष्प आदि कदलीक ।
कंठहार होइहि अति नीक ॥
बनफल कदली फल मूलादि ।
षटरस भोजन करब सस्वाद ॥
बलकल जटा मुकुट मम सोह ।
मृगचर्म छाल पट मम ओढ़ ॥
मृगया व्यसन हमारी वृत्ति ।
धनुष मात्र होई सम्पत्ति ।
षटऋतु काल सखा मम होय ।
दश दिग् द्वारपाल सम सोय ॥
शान्त सुशील सुबुध प्रभु भक्त ।
मम मन्त्री होइहैं अनुरक्त ॥
सुस्थिर धैर्य्य वीरता जोय ।

युद्ध विषे सेनापति होय ॥
यहसब सकल सहायक मोर ।
पर मोहिं शंका होत बहोर ॥

दोहा ॥

जनक सुताकर बिरह जो यह शत्रु बलवान ।
नहिं जानत यहिकर बचत धौ यह लेइहिप्रान ।

सीता—हाय! हमारे अमंगल दर्शनका फलक्या तुरन्त होफलगया। हा भाग्य! हर्षकेसमयमें ऐसा दुःख दिया, जो स्वप्न में भी नहीं जान पड़ता था! हा कठिन विधाता। तुम्हारे विचार में क्या यही था? तुमजो पर्वत को रेणु और समुद्रको गोपद समान करसक्ते हो सो इसी बहाने से दिखलादिया, कहांतो राजा होना और कहां एकाएकी बनवास देना! जो तुम्हारे विचार में होसो होने दो! कुछ हानिनहीं! यदि हम भोगबिलासिनी वा राज्यसुखकी अनुरागिनी होती तो हम को यह दुःख जान पड़ता, परन्तु देखलो जिस सुखकी हम भूखी हैं वह भोगने के लिये अभी

बनमें जाती हूं। पर यह भीख मांगतीहूं कि बनमें कुछ और बिडम्बना न करियो!

राम—प्रिये! क्या एका एकी उन्मत्त होगई हो? क्या तुम बनमें जाओगी? बन जो अत्यन्त भयकर स्थान है उसको क्या नहीं जानतीहो? हमारे वर्णन करनेसे भी नहीं जानपडा? नहींजानकी यह नहीं होसक्ता। यह संभवहै कि हिमलता मरुस्थल में रह सक्ती है? क्या जलज पुष्प-स्थलमे जीता रहसक्ता है? क्या कल्पवृक्ष नन्दन बनको छोडदूसरी ठौर रहसक्ताहै? और अधिक क्याकहें, क्यागृह लक्ष्मीकोघरसे बाहरनिकालदें?

सीता—क्यों नाथ। क्या रंक लक्ष्मी कोभी कोई त्याग करके चला जाता है?

राम—ऐसा उचित तो नहीं है; परन्तु यह विधिलोकालयके लिये है, बनजाने के विषय में नहीं। बनमें सेकडों सिंह, शार्दूल आदि मांसाहारी हिंसक जंतु फिरते हैं और बहुत से बिकटाकार नरद्वेषी मांसाशी राक्षस निवसते हैं; उनकी ऐसी भयानक मूर्त्ति और मुखपसारना और

घोर तर्जन गर्जन बिपरीत क्रीडा कौतुक देख सुनकर तुम भयसे बिह्वल होजाओगी ॥

सीता—नाथ ! वे तुम्हारे बिछोप से तो भयानक नहीं हैं ! जब आप धनुर्बाण हाथ में लिये हमारे संग हैं तब उनसे क्या डर है ? और आप बिना राजपुरी में भी हमारा निर्वाह नहीं, उनसे हजार गुना भयानक जो विरह बेदना है उससे रक्षा करनेवाला राजपुरी में कौन रहेगा ?

राम—प्रिये ! केवल यही नहीं, बनमें पद पद पर बिपत्तिही है, नित्यनया दुःख भुगतना पडता है। कहीं कहीं अति दुरारोह पर्व्वतादिक और कहीं २ मरीचिका मय मरुस्थल को लांघना, होताहै; कितनी एकमद नदियां सन्तरणसे उतरनीपडतीहैं जिनमें अनेक मकरादिक भयानक जीव रहतेहैं; कहीं २ लता पत्रादि संकुलित बन में और कहीं २ भाड़ कांटे से परिपूर्ण संकीर्ण पथमें चलना पड़ता है, कहीं २ कडुये चिरपरे फल मूलके विशेष और भोजन नहीं मिलता है और कहीं फल मूल जलरहित नीरस बन मि-

लता है ! कभी पर्वत की गुहा में, कभी वृक्ष के खोटरमें, कभी तृणादिरहित पटपडमें, पर्णशय्या वा कुश शय्या वा धूलिशय्या में सोनापड़ता है; वर्षा की धारा और शीतकालका हिम और ग्रीष्म काल की तपन सिरपर सहना पड़ता है, कभी प्रतप्त वायुके चलने से सब शरीर जलजाता है। प्रिये ! तुम राजकुमारी और राज कुलवधू हो कभीबाहर निकलीनहीं, चिरकाल तकयत्नसे परिपालिता,मूर्त्तिमयी शीलता, विशेषकरकेनवयौवन संपन्न, अभीतक बाल्य सुकुमारता तुम्हारे चन्द्र-मुख में बिराजमान है; बनबास के दुःसह क्लेश क्या तुम उठासकोगी ? वही बन, वही पर्वत, वह नदनदी, और वह पटपर, वह मरुस्थल, क्या तुम्हारे हंसगति सहित सुकोमल चरण के योग्य है ? अथवा वह तृण पर्ण रचित कठोर शय्या तुम्हारे चन्दन से पूजित इस कमनीय देह के विश्राम स्थल होसक्ता है ? इतने दीर्घकाल के बनमें भ्रमणकरनेसे तुम्हारीत्रैलोक्य मनमोहनी कमनीय कान्ति कुम्हलाय जायगी और हि-

क्लोल युक्त सरोवरके जल सदृश तुम्हारा सुमधुर लावण्य सूर्य की प्रचण्ड किरणों से जातारहेगा, यह हमसे नहीं सहा जायगा।

बासंती—(रोदन सहित) सखि! राजपुत्र जो कहते हैं, उसमें कोई बात भी मिथ्या नहीं है। बन का दुःख तुमसे नहीं सहाजायगा। बनमें जाने से तुम जीती न रहोगी, यदि जीती रही भी तो यह तुम्हारा रूप न रहेगा। जानकी! तुम्हारे पाओं पड़ती हूं तुम ऐसा न कहो॥

सीता—प्रिय सखि! क्या रूपही अमोल्य धन है? अपने जीवन की चिन्ता कौनबड़ी बात है? यदि प्राण जांय, तो घरपर क्यों जांय? इससे बनमें प्राण वल्लभ को देखते हुये उनके चरण कमल के नीचे जांय तो बहुतही अच्छा है! पर प्राण क्यों जांयगे? और क्लेश क्यों होगा? यदि पतिके चरणपर हमारी एकान्त भक्ति है तो जो बन औरों के लिये दुःखदाई है सो हमको सुखदाई अवश्य होगा! जो हमारे जीवन मूल हैं, जो हमारे हृदय मन्दिरके एकमात्र देवता हैं, उन्हीं

प्राणपति के साथ रहने से क्या हमको सुख न होगा ? वे जो हमको भ्रमण शयन और भूख प्यास का भय दिखाकर बनगमन में निषेध करते हैं इससे यही विदित होता है कि हमको सुख बिलासिनी जानकर हमारा तिरस्कार करते हैं ! परन्तु सब जगत में अब बिदित होजायगा कि सीता सुखा शक्ता वा पति पदानुरक्ता, सीता भोगविलासाभिलाषिनी वा स्वामी संग प्रार्थिनी, सीता वेश भूषा शृंगार की अभिमानिनी वा पति प्रेमकी भिखारिणी है !

वासन्ती—(जनान्तिके) सखि उर्मिले ! देखो सीता को आज क्या होगया है ? कोमल स्वभाव नहीं दीखपड़ता है ! मानो उसके मुख से अग्नि निकलती है ! हाय ! सर्वनाशी कैकेई ! तैने क्या सत्यानाश करदिया ! राजपुत्र को बनमें भेजा, और फिर राजलक्ष्मी को भी विक्षिप्त कर दिया ॥

उर्मिला—(जनान्तिके) विधाता के मनमें जो था वही हुआ ! (रोदन) ॥

राम—(सीता का हाथपकड़कर) प्यारी, धीरज धरो।

मुझे भली भांत विदित है कि तुम पतिप्राणा हो; केवल हम बनवास के कठोर क्लेशको शोच कर तुम्हारे जानेको निषेध करते हैं; और यह भी डरहै कि तुम बनमें जाओगी तो संसार में ऐसा मिथ्या कलंक रटा जायगा कि राजा दशरथ ने अपने पुत्र और पुत्र बधू दोनों को बन वास दिया। अथवा कोई अन्य प्रकार का अपवाद दंगे। विशेष माता की भी वृद्ध अवस्था है, और हमारे वियोग से कातर रहेगी, प्रिय भ्राता लक्ष्मण भी हमारे साथ बनमें जांयगे-

वासंती—(चित्कार पूर्वक) हाय हाय! क्या हुआ १! उर्मिला की क्या दशा होगई ? (उर्मिलाको गोदी उठाकर) जानकी! उर्मिला को देखें, उर्मिला अचेत होगई!

सीता—अये प्राणप्यारी बहन्! तुम यह सुनतेही भय भीत होगई! (जल देकर उर्मिला को चैतन्य करना) सखी वासंती! उर्मिला को लेकर उसघरमें जाओ (उर्मिला को पकड़ कर वासंती का प्रस्थान) लक्ष्मण तुमभी जाओ।

राम-बिना बिचारे हमने बड़ा बुरा काम किया। भाई लक्ष्मण! यदि तुम वधू उर्मिला को समझा बुझाकर चलसको तो चलोनहीं तो नहीं।

लक्ष्मण—जो आज्ञा! इसकीकुछ चिंतानहीं, हमउसको अभी समझाकर आते हैं (प्रस्थान)

सीता-- आर्य पुत्र! उर्मला की इस बात में क्योंकर सम्मति होगी? पर लक्ष्मण हम लोगों केसाथ जातेहैं इस बात पर कदाचित् मान जावे।

राम—प्रिये! अब भी कहती हो "जो हमलोगों के" साथ(हम तुमको कहते थे कि माता अब शोकाकुल हो रही हैं तुम जो समीप न रहोगी तो कौन उनको समझायेगा! इसलिये कहता हूं कि प्राण प्यारी! तुम बनके जाने की इच्छा मनसे त्याग करदो। पिताहमारे शोचसे जीवन मृतक हो रहेहैं; इसअवस्था में हमारे जीवितेश्वरी के गुण देखने से उनका हृदय किंचित् ठंढा होगा।

सीता—(रोदन के साथ) आर्यपुत्र! क्या सत्य२ हमको छोड़ जाओगे? हम तुम्हारे चरणों में क्या अपराध किया है, जो हमको बारबार छलतेहो।

हमारा हृदय जानकर भी मीठी बोली से हमको भुलाते हो ! जो पतिके साथ रहने से संसार में कोई दोखे तबतो नाथ सभी झूठहे ? तब क्यों शास्त्र में कहते हैं कि अबलाजाति को पतिके विशेष और कोई गति नहीं; पतिसेवा विहीन स्त्रियों का जीवन वृथा है, पति दर्शन अथवा पतिके ध्यान बिना जो दिनव्यतीत होता है पति प्राणा स्त्रीके लिये वह दिन दिनही नहीं जो स्त्री पतिका प्रेम उद्देश्यकर अपना सुखनहीं ! छोड़ सकती उस स्त्री को इस संसार में वा परकाल में राजपुरी क्या इन्द्रपुरी में किसी समय किसी स्थान में सुख लेशमात्र नहीं मिलेगा। उस स्त्रीका इसप्रकार से सुखका चाहना और हिरणी का मृगतृष्णा में जल का ढूढ़ना दोनोंही समान हैं। पति चाहे राजा हो वा भिखारी हो, कुरूप हो व सुरूप हो, मूर्ख हो वा पण्डित हो, गृही हो वा बनचारी हो, छाया के समान पतिअनुवर्त्तिनी होनी पतिव्रता का लक्षण है। तब हे नाथ ! यदि शास्त्र का बचन मानना

है तो कहो हमको घरमें रहना क्योंकर शोभता है? कौन नहीं जानता है कि स्त्री स्वामी की अर्द्धांगी कहाती है; तो जो आप अर्द्धअङ्गको घरमें छोड़कर बनजाओगे तब तुम्हारा सत्य पालन पूरा कैसेहोगा? निदान यही समझकर हमको साथ लेना उचित है।

(लक्ष्मण का प्रवेश)

राम—कहो भाई कुशल तो है?

लक्ष्मण—हां।

राम—लक्ष्मण, अब क्या करें? जानकी ऐसी कातर होरही हैं कि इनका गृहमें छोड़ना भी कठिन है और साथ लेचलना और भी कठिन है! एक तो बनबास, दूसरे स्त्रीका संग, प्रति पदमें बिपत्ति की आशंका है, विशेष करके इतना दुःख क्या प्यारी से सहाजायगा?

सीता—प्राणनाथ, तुम इसबात का शोच न करो हम बिना क्लेश तुम्हारे पीछे पीछे तुम्हारे पदचिह्न देख देख पैरों २ चलीजावेंगी, हमको कुछ[illegible]

न होगा, वरण हमको सम्पूर्ण सुख प्राप्त होगा। आर्य जहां हैं वहां हमारा स्वर्गभी है? तुम्हारे मुखचन्द्र को निरख और तुम्हारे वचनामृत को पानके निरंतर क्या भूख प्यास रहेगी? ऐसे सजल जलद रूपी पतिका करुणामृत धारामें शीतल होकर, और ऐसे कमल नयन की सुशीत स्नेह दृष्टि के आधीन रह कर क्या पथ श्रम शान्त न होगा? तुम्हारे समीपमें जोखाने के लिये कडुवा, कसेला, फलमूल मिले सो भी राजराणी के भोग से मिष्ट होगा! और वृक्षछाल चित्रवस्त्र होंगे; कुश तृण भी विनोद शय्या होगी, और पत्रकुटी मणि मन्दिर होगा; परन्तु तुम्हारे बिना यह अमर पुरी के समान सुसराल और चन्द्र लोकके सदृश पितृगृह यमालय के सदृश जान पड़ेगा! और लोग यदि हमको इष्ट देवी के तुल्य पूजाकर और भोजन के लिये अमृत भी दें वह भी विष तुल्य जान पड़ेगा! हमने तुम्हारा विरह और दूसरों का स्नेह इनदोनों को समान समझा

रक्खा है। तुम जो हमको छोड़कर चलेजाओगे तो प्राणभी हमारी देहको छोड़जांयगे। इस लिये हे प्राण नाथ! मैं कातर होकर आपके चरणों में पड़ती हूं (चरण में पतित) बनयात्रा में अनुमति करो।

राम—प्रिये उठो (हस्तधारण पूर्वक उठाना) तुम्हारी यह दशा नहीं देखीजाती है! जिसदुःख के लिये बनजाने को निषेध करते हैं यदि घरमें उससे अधिक दुःख हो तब बनही में जाना भला है! चलो, तुम्ही को कंठहार करके बनमें चलें, फिर जो कुछ ललाट में लिखा है सो होगा। अपनी प्रियभगिनी और सखियों से बिदामांगो। तुम्हारे वस्त्रालंकार जो कुछ हैं सो देडालो। हाय! राजरानी होनेके लिये जो सब शोभाके पदार्थ धारण किये हैं, उनके तजने के लिये कैसेकहूं! परन्तु दैवके प्रतिकूलहोने से सभीकरना पड़ताहै और सब सहना होता है! (स्वागत) दैव बिग्रह अतः—

यच्चिन्तितम् तदिहदूर तरंप्रयाति

यत्र तया नगणितं तदिहाभ्युपैति ।
प्रातर्भवामि वसुधाधिप चक्रवर्त्ती
सोऽहंब्रजामिबिपिने जटिलस्तपस्वी ॥

प्रका।श्च)—जाने दो ! भाई लक्ष्मण। तुमभी शीघ्रता करो। हमारा धन संपत्ति जो कुछ है सबब्राह्मणों और दीन दुखी अंध आतुर को दे डालो। पन्थकेलिये कुछ आवश्यकनहीं है। केवल धनुर्बाण और गुरुजनों का आशीर्वाद मात्र साथलो। बिलंब करना उचितनहीं है चलो तीनोमिलकर माता पिता गुरुजनों के चरणों से बिदा होकर आजही प्रस्थान करें। (सबका प्रस्थान)

पंचमाङ्क

(कौशल्या का गृह)

(राजादशरथ कौशल्या औरसुमित्रा अधोमुख बैठेहुये)

सुमित्रा—महाराज ! रात बहुतगई अब चलिये सो रहिये।

राजा—चलो-जैसे यहां रहे तैसे वहां (गात्रोत्थान) ॥

(सुमंत्र का प्रवेश)

कौशल्या—(उच्चस्वर से रोतीहुई) अरे सुमन्त्र! हमारे रामको कहां छोड़आया? अरे कैसे कठिन हृदय से हमारे प्राण धन को बनमें छोड़आया? अरे भूखके समय सुकुमारों को कौन खाने को देगा? हाय! जब राम लक्ष्मण पुरी के बाहर निकलते थे, कितनेएक हाथी घोड़े और पैदल साथजाते थे और जिनको सौ तह की कोमल शय्या पर सोनेसे भी निद्रानहीं आती थी; जिन चन्द्रमुखी जानकी राजकन्या, और राजबधू लक्ष्मी का अवतार, कभी भी राजमार्ग में पादक्षेप नहीं किया, हायरे! वे सब अब अनाथ दरिद्र बालकों के समान नंगेपैरों मार्गमें और बनमें घूमते हैं। हाय! वे सब वृक्षके नीचे धूलमें सोते हैं॥

राजा—(उसास लेकर) सुमन्त्र! शीघ्र बोलो, हमारे रामको कहां छोड़आये? उन्हों ने तुमको कहां से विदाकिया और वे किधरगये? और तुमसे कुछ हमारे लिये कहा है? इस कठोर नराधम को अब तक पिता करके समझते हैं? चाहे

हमारे लिये कुछ न कहें पर मन्द भाग्यवती कौशल्या और शान्त बुद्धी सुमित्रा के प्रबोधने के लिये कुछ भी नहीं कहदिया है ? (उत्थान)

सुमंत—महाराज ! आप धीरजधरके बैठें तो हम सब एक २ करके सुनावें।

राजा—(बैठकर) कहो !

सुमन्त—महाराज ! उन्हों ने भागीरथी के तीर से हमको लौटायदिया। वे सब प्रयागकी ओरगये। वे नीरोग शरीर प्रशांत चित्त से जाते हैं, केवल आपलोगें काही शुभाशुभ चिन्तवन करते हैं।

राजा—नहीं सुमन्त ! रामकी वार्ता इस प्रकार कहने से हमारा जी नहीं भरता। जिस समय राम मधुरवचन से हमको समझाय बुझाय के चले-गये उसी समय से जो २ बातें हुई हैं सो सब एक २ करके सुनाओ। चलने के समय अयोध्या बासियों ने क्याकहा, और प्रियभाषी रामउनको किस प्रकार समझाय बुझाय कर कहांगये, यह सब आदिसे अन्ततक कहो।

सुमन्त—महाराज ! यह दारुण दुःख जनक कथा

आप क्यों पूछते हैं? उस समय की वृत्तांत स्म-रण करने से हमारा हृदय विदीर्ण होता है। ज्योंहीं राजपुत्र ने राजमार्ग में प्रवेश किया त्योंहीं चारोंओरसे ऐसा हाहाकार और रोदन का शब्द उठा कि वैसा कभी सुनने में नहीं आया। ऐसा जानपडा कि मानो प्रलय का स-मुद्र उमगउठा। अथवा दावाग्नि दग्धवनचरघोर शब्द करउठे। राजमार्ग में कोठों पर, द्वारों पर, खिडकीझरोखोंमें, जहांदेखो वहां बालवृद्ध बणिता आदि स्त्री खडी होकर कहती हैं, कि हाय अवहम सबमरें। क्या सर्वनाश हुआ। क्या महा आपदा पडी! हाय कैकेई! तुझे धिक्कार!

राजन् तुम्हें—

राजा—सुमन्त! कहो २ कोई बात न छोडो (उत्थान)

सुमन्त—महाराज! किसीनेतो कैकेईको धिक्कारदिया और किसीने महाराजको धिक्कारा! और कि-सीने अपनेको धिक्कारदियाकि ऐसे स्त्रीजित् रा-जाके आधीन बसते हैं! और झरोखोंमें विलाप करती हुई स्त्रियां रोरोकर कहने लगींकि आज

हमलोग इस आशामें बैठीथीं कि युवराज राम-
चन्द्र जानकीके साथलिये जब अभिषेक होनेको
इस मार्गसे जांयगे, उसके श्री अंगमें पुष्पों की
बर्षाकरेंगी, उसके बिपरीत उनकी बनयाचा देख-
कर आंसू बहाने पड़े। नगरवासी स्त्री पुरुष सब
शोक दुःखमें बिह्वलहोकर महाराजको बहुत२
धिक्कारकिया और बिलाप करतेथे! किसी २ के
आचरण और व्यवहारमें ऐसाभी जानपड़ताथा
कि वे लोग बिरोधी होजांय!

राजा—(बैठकर) आह! ऐसा होय तो हमारे पापों
का योग्य फल मिले! हाय! नगर बासियो ह-
मारा प्राणदण्ड क्यों नहीं किया?

सुमन्त—महाराज! तब क्षमा शील गुणाकर राम-
चन्द्र अति गम्भीरभाव और मधुर बचनसे उन-
को समझाया; परन्तु बहुतनोंमानें और सबकेसब
रामचन्द्रके साथ जानेको उद्यत हुये! और सब
यही कहतेथे कि राजपुत्र जिस बनमें जाकर
बसेंगे, हमभी सब वहीं बसेंगे! तो वह बनभी म-
हा समृद्धशाली नगर होजायगा और वह अ-

योध्यापुरी लोगों बिन घोर बन होजायगी। इससे रामचन्द्रका बन बास न होगा कैकेई और भरतही को बनवास होगा। "हाय राम! कहां जाते हो? तुम्हारे बिना यह धर्म रहित कोशल राज्यमें नहीं रहसक्ते हैं, हमको न छोड़ो" यह कहते हुये समस्त प्रजा वर्ग व वेदवित् ब्राह्मण मण्डली रथके पीछे २ दौड़ते जातेथे। तब सर्व मित्र प्रजाप्रिय रामचन्द्र रथसे उतरपड़ेऔर पैरों२ उनको लेकर तमसानदीके तीरपर पहुंच। इतनेमें रात्रिहोगई फिर किंचित् आहार कर हम और लक्ष्मणजीने श्री राम और सीता के सोने के लिये कुशशय्या बनाई। उसपर वे सोयरहे। आधीरात पीछे जब पुरजन लोग घोर निद्रामें अचेत होगये तब युवराजने उठ कर हमसे कहाकि इनलोगोंसे छुटकारा पानेका यही समयहै, शीघ्र रथको जोड़ो। हमने घोड़े जोतदिये तब राम लक्ष्मण जानकी तीनों जने रथपर चढ़बैठे और हमने रथको हांका। प्रजा लोगोंको धोखादेनेके लिये कुछ दूर तक तो अ-

योध्याकी ओर चलायाफिर घूम घामके बनकी ओर चले गये ॥

राजा—(उठकर) हा प्रजा लोगो ! तुम सब वंचित हुये ! इतनी दूर जाकर फिर काहे को अचेत निद्रामें सोगये ? (उपवेशन) सुमन्त ! कहो फिर क्या हुआ ?

सुमन्त—उसके पीछे हम लोग तमसानदी के पारगये तो वहां जाकर कंटकादि रहित एक चौड़ाराज मार्ग मिला। उसके दोनों पार्श्व में जोता बोया-खेत, बाग और गांव देखा, और नाना भांतके फल पुष्पोंसे शोभित अनेक बन देखते हुये कोशलराज्य सीमा और वेदश्रुति, गोमती आदि नदी पार उतरकर पवित्र भागीरथी के तट पर पहुंचे। वहां रामचन्द्रके परममित्र गुहराज कुटुम्ब सहित हमलोगोंसे सत्कार पूर्वकमिले;पर हमारे जानेका कारण सुनकरअत्यन्त शोकाकुल होकर बिलाप करने लगे। रातको वहीं रहे,प्रभातको युवराज गुहराजसे मिलकर और हमको समझाय बुझायके बिदाकर। हमसब निर्मूलतरुके

समान भूमिपर पछाड़ खाकर गिरे और स्त्रियोंकी भांत विलाप करके रोनेपीटने लगे। तबरामचन्द्र लक्ष्मण वो जानकी मधुरवाणीसे हम सबोंको समुझाय बुझाय गंगापार उतरगये। हमरोते २ टकटकी बांधकर जहाँ तक दृष्टिपड़ी तहांतक देखते रहे, आगे युवराज, मध्यमें जानकी, पीछे धनुषवाण हाथमें लिये वीर चूड़ामणि लक्ष्मण चले जातेथे! तीनोंजनोंकी भिन्न २ अलौकिकरूप माधुरी देखते २ हम सबोंके शोक सिन्धु उमड़ उठा और आंखोंसे देख न पड़ा!

कौशल्या—अरे सुमंत्र! तू हमारी जलती अग्नि में घृत छोडदिया! मातासे इतना दुःखनहीं सहाजाता! हादग्ध प्राण! तू अभीतक इसपाप देह कामोह त्यागनहीं करसका?

राजा—सुमन्त! हमने तो तुम से कह दिया था कि तुम राम कासाथ न छोड़ना, और अयोध्यामें न आना; तब तुम किसलिये चले आये?

सुमन्त—महाराज! आपनहीं भी कहते तो भी ऐसा कौन चाण्डालहै जो उनको छोड़करचला आता?

पर क्या करें? रामचन्द्र ने किसी भांत नहीं माना, और मुझसे कहा कि तुम जो अयोध्या में लौट न आओगे तो मध्यमा माता कैकेई को यह निश्चय न होगा कि हम सांचही बनमें आये हैं; वह यह समझेगी कि बनके बहानेसे और कहींगये हैं इस बातके सुनने से पिताको और भी एक नूतन दुःखभोगना पडेगा।

राजा—(उठकर) हा पुत्र! तुम्ही यथार्थ में लोक चरित्र जानते हो। हम जिसको पटरानी समझ के पूजते थे, वह वास्तवमें ऐसीही राक्षसी है!

सुमन्त—महाराज! बिदा होने के समय जो कुछ कहा है सो सब सुनलीजिये।

राजा—(बैठकर) कहो! सुनकर प्राण ठण्डे होंय वा निकल जांय!

सुमन्त—महाराज! तीनों जनोंने पृथक् २ कितना कुछकहा सब स्मरणनहीं आता। सर्वाग्रे सर्व गुण सम्पन्न रामचन्द्र ने हमसे कंठ मिलकर कहा कि अयोध्या में जाकर सबसे प्रथम पिता से प्रणाम कहकर कुशल क्षेम पूछना, और हमारी ओरसे

कहना कि वे हमारे लिये चिन्ता वा शोक दुःख न करें। जो भवितव्य था सो होगया; अब इस कारण वृथा शोक दग्ध होकर शरीर को नष्ट करना निष्फल है! बरन हमारे मंगल के लिये अशुभ शोक दुःख को छोड़ना चाहिये। शोक त्यागकर देवार्चन और राजधर्म में एकाग्र चित्त होकर हमको आशिष देंतो हम निर्विघ्नता पूर्वक सत्य पाश से मुक्त होकर उनके चरणों में उपस्थित होवें।

राजा—हाय! हम बड़े कठोर हृदय हैं जो ऐसे भक्तिमान पुण्यात्मा पुत्र को बनवास देकर जीते हैं!

सुमन्त—महाराज! पुण्यात्मा रामचन्द्र कौशाल्या के चरणों में प्रणाम कहदिया है और कहा है कि माताने अतिकठिन व्रत नियम करके हमको पाकर यही आशा कीथी कि सुख प्राप्त हो; परन्तु हम ऐसे अभागे हैं जो उनके आनन्द के समय में दुखदाई हुये। जो हुआसोहुआ अब उनको हमारी ओर से कहना कि व्याकुल होकर कुछ शोच न करें, और परमगुरु माननीय महाराज

का किसी भांत अनादर न करें और शोक में उन्मत्त होकर पिता को कोई दुर्वाक्य न कहें! पिता भी शोकसंतप्त हैं, विशेष कर लज्जा और ग्लानि ने विषयुक्त बाणके सदृश उनके हृदय में प्रवेश करके हृदयको जर्जर करदिया है, इसपर माता के वाक्य शर जो लगेंगे तो प्राण का धारण करना कठिन होगा।

राजा—(उठकर) आह! अभीतक यह पापी प्राण निकले नहीं?

सुमन्त्र—महाराज! रामचन्द्र ने माता सुमित्रा के चरणों में प्रणाम कहकर इस प्रकार बहुत कुछ कहदिया है। और कुलगुरु वशिष्ठदेव और जाबाली, देवलआदि उपाध्याय व ऋषियों को प्रणाम कहकर प्रार्थना किया है कि वेसब महाराज के निकट रहकर सदैव समझाया करें और शीघ्र भरत को ननिहाल से बुलवाकर योग्य राज में अभिषेककरें; कारण यह है कि विनय गुण सम्पन्न भरत आपके निकट रहने से आपका कुछ दुख

भार अल्प होजायगा। और भरत के लिये भी बहुत से स्नेह युक्त उपदेश कहे हैं।

कौशल्या—अरे सुमन्त्र! सचकहो, हमारे रामचन्द्र का मुखतो बनमें अवश्य सूखगया होगा! हाय हाय! बेटा हमारा क्या शोचता होगा?

सुमन्त्र—नहीं माता! मुख नहीं सूखा है, युवराज का हास्य मुख और प्रसन्न भाव किंचित् मात्र भी बिकृतनहीं हुआ! बिवाह करके जब अयोध्या में आये थे उस समय जैसा प्रसन्न बदन था बन गवन के समय भी वैसेही प्रफुल्लित बदन और आनन्द रूपथे!

राजा—(टहलते हुये) हा दग्ध हृदय! ऐसे पुत्रके बिरह तापमें भी विदीर्ण नहीं होता? जो पुत्र राज्यपाने से उल्लासको नहीं प्राप्त होता, जिसको बनजाने से भी बिषाद नहीं होता है, ऐसा सुपुत्र किसीनेत्रिलोकीमें कभीपायाहै? औरऐसा नराधमपिताभी किसीने देखाहै? हाय! हम कहां जांय? यदि मृत्युके पास जानेसे यह दुःखमिटे! (थोड़ी देर चुप होकर) सुमन्त्र! कहो कहो, ह-

मारे प्राण प्रिय लक्ष्मण और कुलोज्ज्वल कारिणी जानकीने क्या क्या कहाहै ? (उपवेशन)

सुमन्त-- महाराज ! आपकी बधू जानकी के गुणोंका क्या बर्णनकरूं ? वेतो साक्षात् लक्ष्मी हैं ! उनकी समान सती स्त्री, स्त्री कुलमें कोईनहीं है, उनके पवित्राचार और एकान्त पतिसेवा परायणताका विशेष परिचय इन्हीं कई दिनों में हमने जान लियाहै । जब बिदाहोनेके समय भक्ति स्नेह और अनुराग के साथ सास ससुर और सखियों को सन्देश कहा तब हमको ऐसा जानपड़ा कि करुणा मूर्त्तिमति होकर हमसे बातेंकहती थीं ! उनके अमृत युक्त बचन सुनते २ हमको ऐसा मोह उत्पन्न हुआ कि हमारे नेत्रोंमें आंसूभर-आये और कानोंसे बधिरहोगये जानकीने क्या २ कहा हमको स्मरण नहीं है ! केवल अन्तमें जो कहाकि हमारी स्नेहकारिणी सास सुमित्रा देवी से कहनाकि लक्ष्मणके कारण कुछभी चिंता न करें, लक्ष्मण जैसे उनके पासथे वैसेही हमारे पासभी रहेंगे, यही याद रहा ।

कौशल्या—हा जानकी ! तुम्हारे चन्द्रबदन को ज्यों २ स्मरण करती हूं त्यों २ हमारा हृदय विदीर्ण हुआ जाता है ! सुमन्त ! हमको भी उसी बनमें लेचलो जहां हमारे राम लक्ष्मण सीता हैं ! हम से अब इस घरमें रहा नहीं जाता न यह कष्ट सहा जाता है !

राजा—सुमन्त ! हमारे प्राणधन लक्ष्मणने जो कुछ कहाहै सोभी कहो ?

सुमन्त—महाराज ! (निस्तब्ध)

राजा—क्यों सुमन्त ! कहते कहते रुक क्यों रहे ?

सुमन्त—नहीं महाराज—उन्होंने भी सबको प्रणाम कहदिया है।

राजा—(उठकर) नहीं२ औरभी कुछ कहा होगा जिसके कहनेमें तुम्हें संकोच होताहै। हम जानतेहैं वह रामकेनितान्त अनुगतहैं, वेसीधीबातकहकर चुप बैठने वाले नहीं ! सुमन्त ! हम तुमको अनुमति देते हैं, तुम निःसन्देह होकर सत्य २ कहो, एकबात भी न छोड़ो, नबनाओ (उपवेशन)

सुमन्त-महाराज ! जिससमय निर्बिकार चित्त राम-

चन्द्र माता कैकेई के चरणों में प्रणाम करे और उनको कुछ हितोपदेश देने को कहा उस समय तरुण वेस वीरवर लक्ष्मण धैर्य नहीं धर सके ! सहसा क्रोध उदय होआया, शीघ्र २ स्वास लेनेलगे और भौहें टेढ़ी कर अग्निसमान प्रज्वलित नेत्रों से दृष्टि करते हुये आपके चरणों में प्रणाम करा और यह कहदिया कि सर्व गुण सम्पन्न ज्येष्ठ भ्राता रामचन्द्र को पिता ने किस अपराध से त्यागकर दुष्ट बुद्धि कैकेई का मनोर्थ पूर्ण किया। जब महाराज दुराकांक्षी स्त्री वाक्य के वशीभूत होकर प्रियपुत्र को बनबास दिया तब कौन निष्ठुर कार्य्य उनके अकरणीय है ? पितृ पितामहों काजो राज्य है सो तो लोक वो धर्म्मानुसार रामचन्द्रही को पाना चाहिये; परन्तु अविचार कर महाराज ने मध्यम पुत्र भरत को दिया ! पिता यही कामना करते हैं कि सन्तान से धर्म्म व नाम बनारहे; महाराज के ज्येष्ठ पुत्र रामचन्द्र ने जितना कि उचित करणीय था सोतो सब किया, तब पिताने उनको

राज्य से काहेको वंचित किया? जैसे पिता प्रति पुत्रका कर्त्तव्य निरूपित है, पुत्र प्रति पिता का भी वैसेही सदाचरण करना उचित है। परन्तु महाराज ने क्या किया? यशस्वी, भक्ति परायण पुत्रको बिना अपराध बनवास दिया; स्नेह ममता के साथ जब हमसबों को परित्याग किया तो अब वृथा शोकाडम्बर करके अपना मूल्य समय क्यों नष्ट करते हैं? महाराज! लक्ष्मण का यह कठोर बचन सुनकर धर्म्मात्मा श्रीमान रामचन्द्र अत्यन्त दुःखित होकर उनको मधुर बचनसे भर्त्सन किया और लक्ष्मण से अपना अपराध स्वीकार करा लिया, और आपके निकट वह सब बचन कहने को बार बार मना करदिया! पर हम क्या करें? आपकी दृढ़ आज्ञा है और पितृ तुल्य प्रभुके सम्मुख मिथ्या बचन भी मुखसे नहीं निकलते; इस कारण कहनाही पड़ा!

जा—(अतिकष्टसे उठकर कातर बचनसे) राम! तुम्ही साधु हो, तुम्ही सुपुत्रहो, तुम्ही सार्थक मानव

जन्म धारणकिया है! किस समय वीर्य्य का प्रकाश और किस समय धैर्य्य धारण करना होता है तुम्ही जानते हो! पुत्र होकर जन्मदाता पिताके निमित्त और धर्म्म के लिये अतुल्य ऐश्वर्य्य भोग लालसा किसप्रकारसे त्याग करना होता है संसारमें प्रथम तुम्होने पथ प्रदर्शन किया! तुम्हारा पवित्र चरित्र मुनि ऋषियों कोभी शिक्षा का स्थल है और देवताओं के भी अनुकरण के योग्य है! यावत्काल सूर्य्य देव त्रिभुवनमे ज्योति प्रकाश करेंगे तावत्काल पर्य्यन्त तुम्हारी यह अनुपम कीर्त्ति दीप्तिमती रहेगी! हा लक्ष्मण! तुमने यथार्थ कहा है, हमारे समान निष्ठुर नरशार्दूल त्रिभुवनमें और कोई नहीं है! ऐसे साधु पुत्रके निर्वासन के कारण होकर अभी तक हम राज भवन और देह भवनमें सुख से वास कर रहे हैं! वाह्य लोकाडम्बर देखाकर कलङ्क और मृत्यु के हाथ से मुक्तिपाने की चेष्टा कर रहे हैं! हा निदारुण प्राण! तुम कंठगत होकर क्यों वाहर होने में बिलम्ब करते हो?

तुम भरतके राज्याभिषेक के समय क्या केकेई के हास्य बदन के देखने के निमित्त अपेक्षा कर रहे हो ? ऐसा तो कभी नहीं होगा, तुम अभी जाओ, अभी निकलो ! हे घृणा ! हे लज्जा ! हे शोक ! हे कलङ्क भय ! इस समय तुम सब कहां हो ? तुम सबके राजा दशरथ के प्राण इस समय महा कष्ट में हैं ! कारागार में बद्ध हैं—अनिच्छा से बद्ध हैं ! निर्गमन का पथ देख नहीं पड़ता । तुमसब आकर पथ दिखादो, हाथ पकड़ कर निर्गत कर दो । विलम्ब न करो ! और सहा नहीं जाता ! सुख का शेष—दुःखका भी शेष, परिपूर्ण ! सुमंत्र ! इस समय गुरु देव कहां हैं ?

सुमित्रा—बहिन ! क्या देख रही हो ? धरो धरो, शीघ्रता करो, व्रतकरो, चलो सुलादें ! (दोनों का परस्पर हस्त धारण)

राजा—अये प्रिये कौशल्ये ! अये प्रिये सुमित्रे ! यही देखा सुना ! हमारा सबदोष मार्ज्जन करो ! हम चलते हैं—हमारा समय आगया—आंख से नहीं देखपड़ता—कान से नहीं सुन-

पड़ता और स्थिर नहीं रहसक्ता ! (कम्पित) हमारा हृदय कम्पवान होता है—शरीर विकल—इन्द्रिय स्थिर—वायु ऊर्द्ध गामी—मस्तक घूर्णायमान—आसन्न काल ! अन्धमुनिका शाप आज हमको फला ! पुत्रशोक में प्राण वियोग होता है ! हा राम ! हा लक्ष्मण ! हा जानकी ! तुम सब कहां हो ? इस समय हमारे सम्मुख नहीं आये ? राम ! राम ! राम ! (पतन और मृत्यु)

(पटक्षेपण)

(नैपथ्ये)

हा ! क्या सर्वनाशहुआ ! हा कपाल फूटगया ! कपाल फूटगया ! हाय क्या हुवा ! क्या होते २ क्या होगया !

(नैपथ्यगीत)

द्वितीयाङ्क प्रथम गर्भाङ्क के अन्तमें।

रागिनी सहाना-ताल तिताला ॥

अयोध्या नगरे, आजु आनन्द अपार।
राम राज्येश्वर होंगे, शुभ समाचार॥
मधुर मङ्गल गीत, सुनि अति सुललित,
सब मङ्गल बाजन, बाजे अनि बार।
पल्लव कुसुम हार, शोभाकरें द्वार द्वार,
प्रति घर सब करें, मङ्गल आचार।

तृतीयाङ्क द्वितीय गर्भाङ्कके प्रथममें।

कैकेई के पुरद्वार में दो बन्दीजनों का गाना।

रागिनी रामकली-ताल एकताला ॥

जागिये श्री राज राज, पंछी बन बोलें।
शशिकी ज्योति मलिनभई, चकई पियमिलनगई,
अतिसुगन्ध पवन बहत, शाखा द्रुम डोलें।
अतिपवित्र सरयू चले, स्नानहेत सब रमणिचले,
फूल चंदन हाथ लिये, कर कङ्कन बोलें।

देवआलय गान होत, करत आरती उदोत,
बाजत डफ झांझ बीन, अरु मृदङ्ग ढोलें।

चतुर्थाङ्क द्वितीय गर्भाङ्क के अन्त में।

रागिनी योगिया-ताल धीमा तिताला॥

क्या महा बिषाद हुवा, विधाता क्या किया।
अयोध्या जीवन रामको हाय बनवास दिया॥
साथ अनुज लक्ष्मण, तजिके राज भूषण,
कटि पै चीर वसन, शिर जटा बांध लिया।
जनक राज नन्दिनी, रूपस्थिर सौदामिनी,
होनेको पति सङ्गिनी, सर्व सुख त्याग किया।
मनकी कामना सब, बिनाश होगई अब,
सुख रवि तिर भव, दुख यामिनी आया।
अब अयोध्या बास में, रहें किस सुख आशमें,
इनके संग बनवासमें, चलि शीतल करें हिया।

पंचमाङ्क के अन्त में।

रागिनी आशावरी वा भैरवी—ताल एकताला॥

उठिये श्री महाराज, एक बार बोलिये।
पंकज मुख मलिन भयो, श्रीकी ज्योति छीण भयो।

यह दुख नहिं सहाजात, कमलनैन खोलिये
हम सब चिर संङ्गिनी, पति की अर्द्धाङ्गिनी
तौ फिरि क्यों छाँरिचले, अनाथ नाथ बोलिये ।
अकूल दुःख सागर में, हमहिं छोडि डागर में,
पुत्र शोक सागर सो, आप पार होलिये ।
अबहम वेहि शरणआय, शीतल हिय करबलाय,
हा बिधि यह काह भयो, अन्धकार छा लिये ।

धर्म भगा
पोट - [illegible] पुर (फैजाबाद)